B.A I (Hons) 27.7.20

I Paper - भारतीय दर्शन

शंकर और रामानुज का ब्रह्म विचार —

शंकर और रामानुज वेदान्त दर्शन के एवं भारतीय के महत्वपूर्ण पुरुष को माना जाता है। जहाँ शंकर का विचार अद्वैतवाद कहलाता है वहीं रामानुज का विचार विशिष्टाद्वैत के नाम से पुकारा जाता है।

शंकर का तत्वशास्त्रीय विचार अद्वैतवाद इसलिए कहा जाता है कि इन्होंने पारमार्थिक सत्ता को एक तथा अद्वैत माना है। जिसे ब्रह्म कहा जाता है। ब्रह्म को छोड़ कर किसी भी सत्ता को पारमार्थिक दृष्टिकोण से वास्तविक नहीं माना जा सकता है। Maxmuller के अनुसार ब्रह्म ही वास्तविक है और यह विश्व असत्य है। ब्रह्म और आत्मा एक है। शंकर ने स्वीकार किया है कि ब्रह्म पारमार्थिक सत्ता के रूप में अनिर्वचनीय है। बुद्धि के किसी भी आकारों को ब्रह्म पर लागू नहीं किया जा सकता। यह देश, काल, कारण कार्य इत्यादि सभी उपाधियों से रहित है। ब्रह्म सभी प्रकार के परिवर्तन से रहित है। अर्थात् ब्रह्म अपरिवर्तनशील है।

ब्रह्म निर्गुण, निर्विकल्प और निराकार है। इसमें किसी विशेष गुण को आरोपित नहीं किया जा सकता। ब्रह्म का यह विचार पारमेनाइडीज तथा Spinoza के विचार से मिलता है उन्होंने कहा था " ब्रह्म सभी प्रकार

के भेदों से रहित है और तीन प्रकार के होते हैं·
सजातीय, विजातीय तथा स्वगत और ब्रह्म
को उन्होंने सत् चित् आनन्द कहा है
शंकर ने ब्रह्म को ही आत्मा कहा है। उपनिषद
में ना के प्रयोग में आत्मा और ब्रह्म को अभिन्न
माना है।

रामानुज के तत्वशास्त्रीय विचार में विशिष्टाद्वैत की संज्ञा दी जाती है क्योंकि रामानुज ने स्वीकार किया है कि ब्रह्म विशिष्ट गुणों से युक्त होता है ब्रह्म ही ईश्वर है और ईश्वर ही ब्रह्म है उन्होंने ईश्वर को अन्तरयामी कहा है डॉ० राधाकृष्णन ने कहा है कि "शंकर के दार्शनिक विवरण के रूप में यह मूल्यवान है"

शंकर ब्रह्म और ईश्वर में भेद मानते हैं लेकिन रामानुज दोनों में भेद नहीं मानते हैं शंकर का ब्रह्म निर्गुण है तो रामानुज का ब्रह्म को सगुण माना है शंकर ब्रह्म को व्यक्तित्व रहित मानते हैं तो रामानुज ब्रह्म को व्यक्तित्व युक्त मानते हैं ब्रह्म का साक्षात्कार सिर्फ भक्ति से ही सम्भव है इसलिए मोक्ष मार्ग के रूप में शंकर ज्ञान मार्ग को बताते हैं तो रामानुज भक्ति मार्ग पर बल देते हैं।

इस प्रकार निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि तत्वशास्त्रीय दृष्टिकोण से शंकर और रामानुज ब्रह्म को सर्वोच्च सत्ता के रूप में स्वीकार करते हैं लेकिन दोनों के ब्रह्म सम्बन्धी विचार के लेकर अनेक बातों में भिन्नता है